प्रातः क्लास 7/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चे जानते हैं, इन्हों का नाम क्या है? ब्राह्मण। ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ ढेर हैं। इससे सिद्ध होता है यह एडाप्टेड है; क्योंकि एक ही बाप के बच्चे हैं तो जरूर एडाप्टेड है। तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ ही एडाप्टेड चिल्ड्रेन्स हो। बहुत चिल्ड्रेन्स हैं। बहुत बच्चे एक होते हैं प्रजापिता ब्रह्मा को और एक होते हैं परमपिता परमात्मा शिव को। तो जरूर इन्हों का आपस में कनेक्शन है प्रजापिता ब्रह्मा और परमपिता शिव का; क्योंकि उनके(शिवबाबा) के हैं रूहानी बच्चे और इनके(ब्रह्मा) के हैं जिस्मानी ब्राह्मण बच्चे। अगर उनके हैं तो जैसे कि भाई2 हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के साकार भाई–बहन हो जाते हैं। भाई बहन का क्रिमनल नाता कब होता नहीं। तुम्हारे लिए यह आवाज होता है ना कि यह सभी को भाई बहन बनाते हैं; परन्तु कौन बनाते हैं, यह तो ढेर हैं। सिद्ध होता है परमपिता परमात्मा ही आकर उन्हों को भाई बहन बनाते हैं कि शुद्ध नाता रहे। क्रिमनल दृष्टि न जाये। सिर्फ इस जन्म में यह दृष्टि पड़ जाने से फिर भविष्य कब भी क्रिमनल दृष्टि नहीं पड़ेगी। ऐसे नहीं कि वहाँ बहन भाई समझते हैं। वहाँ तो जैसे महाराजा महारानी होते हैं वैसे ही होते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं और हम सब भाई बहन हैं। प्रजापिता ब्रह्मा नाम तो है ना। प्रजापिता ब्रह्मा कब हुआ था यह दुनिया को पता नहीं है। तुम यहाँ बैठे हो जानते हो हम पुरुषो0 संगमयुगी ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। अभी यह धर्म नहीं कहेंगे। कुल की स्थापना हो रही है। तुम ब्राह्मण कुल के हो। तुम कह सकते हो हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ जरूर एक प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हैं। यह नई बात है ना तो इसको समझाना होता है। तुम समझाते हो हम सभी ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। यूँ तो वास्तव में हम सब ब्रदर्स हैं। जबकि हम सभी भाई आत्माएँ हैं। एक बाप के बच्चे हैं। उनके लिए एडाप्टेड नहीं कहेंगे। हम आत्मा उनकी सन्तान तो अनादि हैं। वह परमपिता परमात्मा सुप्रीम सोल है। और किसको सुप्रीम अक्षर नहीं कहेंगे। सुप्रीम कहा जाता है पवित्र को। ऐसे नहीं कहेंगे कि सभी में प्युरिटी है। प्युरिटी सीखते हैं इस संगम पर। तुम जानते हो हम पुरुषोत्तम संगमयुग के निवासी हैं। जैसे कलियुग के निवासी, सतयुग के निवासी कहा जाता है ना। सतयुग कलियुग को तो बहुत ही जानते हैं। अगर दूरनदेश बुद्धि हो तो समझे कलियुग और सतयुग के बीच को कहा जाता है संगम। शास्त्रों में फिर युगे2 कह दिया है। एक एक युग के बाद अवतार लेते हैं। बाप समझाते हैं मैं युगे2 नहीं आता हूँ; परन्तु पुरुषोत्तम संगमयुगे आता हूँ। तुम्हारी बुद्धि में भी होना चाहिए हम पुरुषोत्तम संगमयुगे ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। न सतयुग में हैं न कलियुग में हैं। संगम के बाद सतयुग जरूर आता है। तुम अभी सतयुग में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। वहाँ पवित्रता बिगर कब कोई जा नहीं सकते। इस समय तुम पवित्र बनने लिए पुरुषार्थी हो। सभी पवित्र तो नहीं हैं। कई पतित भी होते। चलते2 गिर पड़ते हैं तो छिपकर आये अमृत पीते हैं। वास्तव में जो अमृत छोड़कर विख खाते हैं उनको कुछ समय आने नहीं देते; परन्तु यह भी गायन है जब अमृत बांटा जाता था तो विकारी असुर छिपकर आकर बैठते थे। कहते हैं इन्द्र सभा में कोई अपवित्र आकर बैठा। एक परी उस विकारी को ले आई फिर उनका क्या हाल हुआ। विकारी तो जरूर गिर पड़ेंगे। यह समझ की बात है। विकारी चढ़ न सके। छिपकर आये बैठते थे। कहते हैं वह पत्थर जाकर बना। अब ऐसे नहीं कि मनुष्य पत्थर वा झाड़ जाकर बनते हैं। पत्थर बुद्धि बन गया। यहाँ आते हैं पारस बुद्धि बनने लिए; परन्तु छिपकर विख पीते हैं तो सिद्ध होता है पत्थर बुद्धि ही रहेंगे। यह सामने समझाया जाता है। शास्त्रों में ऐसे ही बैठ लिखा है। नाम रखा है इन्द्र सभा। जहाँ पुखराजपरि, माणिकपरि, किसम2 के परियाँ दिखाते हैं। रत्नों में भी नम्बरवार होते हैं। कोई बहुत अच्छा रत्न, कोई कम। कोई कीमत बहुत कोई बहुत कम होती है। 9 रत्न की मुंडी भी बनाते हैं। बहुत एडवरटाइज़ करते हैं। नाम तो रत्न ही है ना। यहाँ बैठे हैं ना; परन्तु उनमें भी कहेंगे यह हीरा है यह पन्ना, यह माणिक, यह पुखराज, यह पिरोज़ा बैठे हैं। रात दिन का फर्क है। उनकी वैल्यु 100 तो उनकी वैल्यु एक रूपया। बहुत फर्क होता है। वैसे ही फूलों की भेंट की जाती है। इनमें भी वैराइटी है। बच्चे जानते हैं

कौन2 फूल हैं। ब्राह्मणियाँ पण्डे बनकर आती हैं। यहाँ की बात फिर उस रूप में डाल दिया है। यहाँ तुम भाई बहन बनते हो। ज्ञान तलवार बीच में है। हमको तो पवित्र रहना है; परन्तु लिखते हैं बाबा कशिश होती है। वह अवस्था अजन पक्की नहीं हुई है। कुछ न कुछ अंग लग जाता है। पुरुषार्थ करते रहते हैं यह भी न हो। एकदम सिवील आई बन जाये तब ही विजय पा सकते हैं। अवस्था ऐसी चाहिए जो कुछ भी संकल्प न उठे। उनको ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। मंजिल है। कितनी वन्डरफुल माला बनती है। आठ रत्न की भी माला बनती है। बच्चे तो ढेर के ढेर हैं। सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी घराणा यहाँ ही स्थापन होती है। उन सभी को मिलाकर फुल पास, स्कालरशिप लेने वाले 8 रत्न ही निकलते हैं। बीच में फिर इन्हों को रत्न बनाने वाला हीरा शिव डालते हैं। जिसने ऐसे रत्न बनाये। ग्रहाचारी बैठती है तो भी आठ रत्न पहनते हैं। इस समय भारत पर राहू की ग्रहाचारी है। पहले थी वृक्षपति की अर्थात् बृहस्पत की दशा। तुम सतयुगी देवी–देवताएँ थे। विश्व पर राज्य करते थे। फिर राहू की दशा बैठ गई। तुम अभी समझते हो हमारे पर बृहस्पत की दशा थी। है वृक्षपति अर्थात् बृहस्पत कह देते हैं। हमारे पर बरोबर बृहस्पत की दशा थी जबकि हम विश्व के मालिक थे। अभी राहू की दशा बैठी है। जो हम कौड़ी मिसल बने हैं। यह तो हरेक समझ सकते हैं। पूछने की भी बात नहीं। गुरुओं आदि से पूछते हैं ना हम इस परीक्षा में पास होंगे? यहाँ भी बाबा से पूछते हैं हम पास होंगे? कहता हूँ अगर ऐसे ही पुरुषार्थ से चलते रहो तो क्यों नहीं पास होंगे; परन्तु माया बड़ी प्रबल है। तूफान में ला देगी। इस समय तक तो ठीक हो आगे चलकर तूफान बहुत आये तो। अभी तुम युद्ध के मैदान में हो। फिर हम गारन्टी कर सकते हैं। आगे माला बनाते थे, जिनको 2/3 नम्बर में रखते थे वह है नहीं। एकदम कांटा बन गये। तो बाप ने कहा है ब्राह्मणों की माला नहीं बनती। युद्ध के मैदान में हैं ना। आज ब्राह्मण कल शुद्र बन जाते। विकार में गया गोया शुद्र बना। राहू की दशा बैठ गई। बृहस्पत की दशा के लिए पुरुषार्थ करते थे, वृक्षपति पढ़ाते थे, चलते2 माया थप्पर लगाये फिर राहू बन गये। ट्रेटर बन पड़ते हैं। वह फूल होते हैं। कोई तो फिर स्टुडेन्ट में पण्डे भी जास्ती तीखे होते हैं। समझाने करने में। बाबा ब्राह्मण को फूल न देकर उनको देंगे। सिखलाने वाले से गुण उनमें जास्ती है। कोई2 में गुण बड़े ही अच्छे होते हैं। कोई भी विकार नहीं। कोई2 में अवगुण होते हैं। क्रोध का भूत, लोभ का भूत। तो बाप जानते हैं यह फेवरेट पण्डा है। यह सेकण्ड नम्बर है। कोई2 तो पण्डे इतने फेवरेट नहीं होते हैं जितना जिज्ञासु जिनको ले आते हैं वह फेवरेट होते हैं। ऐसे भी होता है। सिखलाने वाले भी माया के चम्बे में आ जाने से विकार में चले जाते हैं। आये हैं बहुतों को दुबण से निकालने खुद फँस मरते हैं। माया बड़ी जबरदस्त है। बच्चे भी समझते हैं क्रिमनल आई बहुत धोखा देती (है।) हम एक दो के सामने जाते हैं तो भाई बहन का वह जो डायरेक्शन मिला है वह भी चल नहीं सकता। सिविल आई बदल कर क्रिमनल आई बन जाता है। जब क्रिमनल आई टूटकर पक्के सिविल आई बन जावेंगे तब उसको कहा जाता है कर्मातीत अवस्था। इतनी अपनी जांच करनी है। इकट्ठे रहते हुए, इकट्ठे सोते हुए; परन्तु विकार की दृष्टि न जाये। इस पर कहानी भी बनी हुई है। भल इकट्ठे सोये पड़े होंगे परन्तु बीच में ज्ञान तलवार होगी हम भाई बहन हैं। इस पर एक कहानी है। एक कुमारी मटका भरने जाती थी। वहाँ एक कुमार को कहा यह मटका हमारे सिर पर ऐसे रखो जो अंग अंग से न मिले। हमारे अंग तुम्हारे अंग से न मिले। कहानी तो बहुत बनाई है जो इस समय काम आती है। वह कहा हम ऐसे ही मटका रखूँगा। अच्छा फिर अनायास ही दोनों की सगाई हो गई। सगाई तो बिगर देखे ही कर लेते हैं। तो जब रात को एक दो को देखा तो कुमार ने कहा कुमारी तो वही जिसने हमसे प्रण लिया था अंग अंग से न मिले। बस वह प्रण याद आने से अलग2 ही सोये। प्रतिज्ञा की तलवार बीच में रखी। अंग न लगी। थोड़े दिन के बाद माँ बाप ने पूछा। तो बोला हमारा अंग अंग से नहीं लगता है; क्योंकि हमारा ऐसे प्रण किया हुआ था। ऐसी कुछ कहानी है। " यह भी ऐसे है ना। स्त्री–पुरुष इकट्ठे भी सोते हैं; परन्तु समझते हैं हमारी तो प्रतिज्ञा की हुई है अंग अंग से न मिले। यहाँ तो बीच में ज्ञान तलवार है। वहाँ उ.... थी प्रतिज्ञा की तलवार। – –
– –

ऐसे सभी जगह होते हैं। एक राजाई से निकलकर दूसरे में जाकर शरण लेते हैं। फिर वह लोग भी देखते हैं यह हमारे काम का है तो शरण ले लेते हैं। ऐसे बहुत ट्रेटर बनते हैं। एरोप्लैन में बैठ एरोप्लैन सहित जाकर दूसरी राजाई में बैठते हैं फिर वह लोग एरोप्लैन वापस कर लेते हैं। उनको शरण ले लेते हैं। एरोप्लैन को थोड़े ही शरण लेते। वह तो उनकी प्रापर्टी है। उनकी चीज़ें उनको वापस कर लेते हैं। बाकी मुनष्य मनुष्य को शरण देते हैं। अभी तुम शरण पड़े हो बाप के पास। कहते हो हमारी लाज रखो। द्रौपदी ने भी पुकारा ना कि हमको यह नंगन करते हैं। नंगन होने, पतित होने से बचाओ। सतयुग में कब नंगन होते नहीं। उन्हों को तो कहते ही हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। छोटे बच्चे तो होते ही हैं निर्विकारी। यह गृहस्थ व्यवहार में रहते सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं। भल स्त्री पुरुष बनते हैं तो भी निर्विकारी। इसलिए कहते हैं हम नर से ना0, नारी से ल0 बने। वह है ही निर्विकारी दुनिया; क्योंकि वहाँ रावण राज्य ही नहीं। उसको कहा जाता है रामराज्य। राम शिव बाबा को कहा जाता है। राम2 जपने का अर्थ ही है बाप को याद करना। राम2 जब कहते हैं तो बुद्धि में निराकार ही रखते हैं। राम2 कहते हैं सीता को छोड़ देते हैं। वैसे ही कृष्ण का नाम लेते हैं, राधे को छोड़ देते हैं। यहाँ तो बाप है ही एक। वह कहते हैं मोमकम् याद करो। कृष्ण को पतित पावन नहीं कहेंगे। पुजारियों को तो कुछ भी पता नहीं। छोटेपन में राधे–कृष्ण भाई बहन भी नहीं थे। अलग2 राजाई के थे। बच्चे तो होते ही हैं शुद्ध। बाबा भी कहते हैं बच्चे तो फूल हैं। इनमें विकार की दृष्टि नहीं होती। जब बड़े होते हैं तब दृष्टि जाती है। इसलिए बालक और महात्मा को समान कहते हैं। बल्कि बच्चा महात्मा से भी ऊँच है। महात्मा को तो फिर भी मालूम है भ्रष्टाचार से पैदा हुआ है। छोटे बच्चे को यह मालूम नहीं रहता। यह सभी बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप का बना और वरसा तो है ही। बेहद के बाप का बेहद का वरसा। विश्व का मालिक बनना। तुम विश्व के राजधानी के मालिक बनते हो। कल की बात है। तुम विश्व के मालिक थे। अभी फिर बनते हो। इतनी प्राप्ति होती है तो स्त्री पुरुष बहन–भाई हो पवित्र रहे तो क्या बड़ी बात है। कुछ तो मेहनत भी चाहिए ना। अभी तुम पुजारी से पूज्य बन रहे हो 21 जन्म पूज्य। फिर तुम पुजारी बनते हो। दो युग पूज्य, दो युग पुजारी। सबसे जास्ती बिछूड़े हुए तुम ही हो। सतयुग में भी पहले2 तुम आते हो। वहाँ पूज्य देवी देवताएँ। फिर रावण राज्य पतित पुजारी बन जाते हैं। यह तुम जानते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। वह बृहस्पत की दशा में जाते हैं। स्वर्ग में तो जाते हैं फिर है पढ़ाई पर। कोई ऊँच पद पाते हैं कोई मध्यम। कोई फूल बनते हैं कोई क्या। बगीचा है ना। फिर पद भी ऐ..... लेंगे। पुरुषार्थ खूब करना है ऐसे फूल बनने। इसलिए बाबा भी फूल ले आते हैं बच्चों को दिखाने। बगीचे में तो अनेक प्रकार के फूल होते हैं ना। सतयुग में है फूलों का बगीचा और है कांटों का जंगल। अभी तुम कांटे से फूल बनने पुरुषार्थ कर रहे हो। एक दो को कांटा मारने से बचने का पुरुषार्थ करते हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे। मूल बात है काम की। काम पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। तुमको शिक्षा मिलती है पवित्र बनने की। बड़ा दुश्मन भी यह काम ही है। इस पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। यह तो बच्चों पर रहा ना। जवा(न) को बहुत मेहनत करना है। बूढ़ों को कम। वानप्रस्थ अवस्था वालों को और कम। बच्चों को बहुत कम। तुम जानते हो हमको विश्व की बादशाही की प्राइज मिलती है। इसके लिए एक जन्म पवित्र रहें तो क्या हर्जा। उनको ..... जाता है बाल–ब्रह्मचारी। अन्त तक रहते हैं। जो पवित्र बने हैं उनको कशिश होती है। बच्चों को छोटेपन से ही ज्ञान मिलता जाये तो बहुत बच सकते हैं। छोटे बच्चे अबोध होते हैं। फिर बाहर स्कूल आदि में संग का रंग लग जाता है। संग तारे कुसंग बोरे। बाप कहते हैं हम तुमको पार ले जाते हैं। मनुष्य तो वैश्यालय का अर्थ भी नहीं समझते हैं। सतयुग है बिल्कुल नई दुनिया। बहुत ही थोड़े मनुष्य रहते हैं। फिर वृद्धि को पाते हैं। वहाँ बहुत थोड़े देवताएँ रहते हैं। तो नई दुनिया में जाने का पुरुषार्थ करना है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

– : शिवबाबा याद है? : –